B.A I (Hons)
II paper Philosophy

नैतिकता की आवश्यक मान्यताएँ

मानव जीवन का आवश्यक व [illegible]
का मुख्य लक्षण है। परन्तु [illegible]
अनिवार्य नियम एवं मान्यते हैं [illegible]
से हट के सकते हैं। मनुष्य [illegible]
के कारण कुछ की ऐसी बातें [illegible]
मानना है और वास्तव में नीति की दृष्टि से
मान्य नहीं है। इस प्रकार मनुष्य [illegible]
नैतिक विचारों की [illegible]
परिवर्तन हो सकता है। [illegible]
नैतिकता को तीन तरह के मान्यताओं को
माना है कान्ट ने भी तीन मान्यताओं को [illegible]

(1) स्वतंत्रता — [illegible] मनुष्य के
जीवन के वास्तविक आदर्श का [illegible]
होगा [illegible] नैतिक निर्णय होता है [illegible]
आधार पर ही मान्यताओं की रहती है इन मान्यताओं
को आधार मान लेने पर किसी भी नैतिक निर्णय
का कोई मूल्य नहीं रह जाता। [illegible] कर्म जो कर्ता
द्वारा अपनी इच्छा से सोच समझ, उचित अनुचित
का विचार कर संकल्प करके उसे ही ऐच्छिक
कर्म कहा जाता है। स्वतंत्रता के सम्बन्ध में
मार्टिन्यू ने कहा है कि "स्वतंत्रता ही
नैतिकता का आधार है जहाँ इच्छाओं में
भेद करने की शक्ति न होना प्रयोजन और
संकल्प का अभाव न हो और स्वतंत्र इच्छा

अर्थात् है, लेकिन व्यक्तित्व का केवल प्रकृति द्वारा निर्धारण भी नहीं है, यहाँ नैतिकता का क्षेत्र बहुत है। नैतिकता को निर्धारित करने में नैतिक सिद्धान्तों का योग है।

व्यक्तित्व का विचार वास्तव में आत्म-चेतना और आत्म नियंत्रण का संकेत करता है अतः व्यक्तित्व केवल बुद्धि-विवेक शक्ति है। आत्म-निर्धारित बुद्धि और आत्म निर्धारित क्रिया मिलती है, वही व्यक्तित्व है

(2) विवेक - आचार शास्त्र एक विज्ञान है। उचित अनुचित विवेक के द्वारा ही सम्भव है। रामनाथ हेल्याल ने कहा है कि यदि किसी भी नैतिक विश्वास को आदर्श माना जाए तो नैतिक उत्थान सम्भव है। मनुष्य के दो आवश्यक गुण हैं (i) संवेदनशीलता (ii) विवेक शक्ति मनुष्य अपनी विवेक शक्ति के द्वारा ही अपनी संवेदनाओं के अनुरूप करता है और नैतिक पालन करता है। यदि मनुष्य में विवेक न हो तो उसकी क्रियाएं पशुओं के सदृश होंगी। नैतिक नियम का पालन ऐच्छिक कर्म, विवेक शक्ति रखने पर ही सम्भव है अतः विवेक-शक्ति नैतिकता की इसकी आवश्यक मान्यता है

(3) आत्म नियंत्रण — आत्म नियंत्रण का अर्थ है मनुष्य अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण करना। इच्छाओं के चुनाव में मनुष्य अपने चरित्र से नियंत्रित होता है मनुष्य का

नैतिक तौर पर उत्तरदायी है अतः संकल्प स्वतंत्र है आत्म-नियंत्रण की क्षमता ही व्यक्ति नियंत्रण मनुष्य के नैतिक जीवन का आधार है। आत्म नियंत्रण ही नैतिकता का एक आवश्यक आधार है। आधार भारत में आत्म नियंत्रण शक्ति के अधिकतम में विश्वास करना आवश्यक है। आत्म नियंत्रण का अर्थ यह नहीं कि मनुष्य जब चाहे तब और जैसा चाहे वैसा कर सकता है। इच्छाओं के चुनाव में मनुष्य अपने नैतिक से नियंत्रित होता है मनुष्य अपनी कर्मों में स्वतंत्र है वह स्वयं अपनी कर्मों का निर्णय करता है और अपनी कर्मों का दायित्व उठाता है। अतः मनुष्य अपनी भावनाओं से ही अपनी नैतिक का निर्माण करता है